# षष्ठम अध्याय

# ध्वनिलेखागार विषयक सर्वेक्षण और निष्कर्ष

## षष्ठम अध्याय

# 6. ध्वनिलेखागार विषयक सर्वेक्षण और निष्कर्ष

## 6:1 सर्वेक्षण

ध्वनिलेखागार के विषय मे सर्वेक्षण की दृष्टि से तीन सर्वेक्षण किए गए है, जिनमे से पहला ध्वनिलेखपाल से साक्षात्कार के लिए है। ध्वनिलेखागार की महत्वपूर्णता और उसके विकास के संबंध में यह प्रश्न शोधकर्ता के द्वारा विचारित हैं। इसकी संरचना का मुख्य उद्देश्य संगीत संवर्धन, अध्ययन और प्रसार को सुगम बनाना है। ध्वनिलेखागार में विभिन्न प्रकार के ध्वनिमुद्रण संग्रहित होते हैं, जिसमें संगीत की विविधता और ऐतिहासिक महत्वपूर्ण अवधारणाएं शामिल होती हैं। इसमें संगीत की सभी विधाओं के ध्वनिमुद्रण होते हैं, जिनमें गायन के भी विशेष स्थान होता है। ध्वनिलेखागार में दुर्लभ कृतियाँ भी हैं, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत के परिप्रेक्ष्य से अन्य ध्वनिलेखागारों में नहीं मिलती हैं। इसके साथ ही, आधुनिक तकनीक का उपयोग करके ध्वनिलेखागार को समृद्ध किया गया है, जिससे संगीत रसिकों और विद्यार्थियों तक पहुँच सके। ध्वनिलेखागार के अध्ययन और प्रसार को बढ़ावा देने के लिए सभी प्रकार के उपाय अपनाए जा रहे हैं, जिसमें निष्क्रियता और सक्रियता दोनों का बड़ा महत्व है।

इस विषय को प्रकाश मे लाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न हैं, जो ध्वनिलेखागार के विषय में हैं। इन प्रश्नों में ध्वनिलेखागार का आरंभ, उद्देश्य, संरचना, और उसमें संगीत और ध्वनिमुद्रण की विविधता का विवरण है। इसके साथ ही, इन प्रश्नों में ध्वनिलेखागार के भविष्य, प्रभाव, और संचालन के तरीकों के बारे में भी जानकारी है। ध्वनिलेखागार के विकास और प्रसार को समझने के लिए ये सभी प्रश्न महत्वपूर्ण हैं।

दूसरा ध्वनिलेखागार के संदर्भ में कलाकारो के लिए प्रश्नावली है, यह प्रश्न संगीत साधकों और शिक्षकों के लिए संगीत के ध्वनिलेखागार का महत्व, अध्ययन, संगीत को सुनने की विधियों, रियाज़ के भागरूप Archives का उपयोग, और संगीतीय अभ्यास में भूमिका को समझने के लिए कैसे मददगार हो सकते हैं। इन प्रश्नों के जवाब संगीत के समझने और अध्ययन में महत्वपूर्ण दिशानिर्देश प्रदान करते हैं।

यह प्रश्न संगीत साधकों के लिए आवश्यक और महत्वपूर्ण हैं। इन प्रश्नों के माध्यम से संगीत संस्कृति और ध्वनिलेखागार का महत्व समझा जा सकता है। ध्वनिलेखागार को एक महत्वपूर्ण संग्रह स्थान के रूप में देखा जा सकता है, जो संगीत की विरासत को संरक्षित करता है। संगीत साधकों को सही सुनने की विधि और धारा की समझ होती है, जिससे वे अपने संगीत में समृद्धि कर सकते हैं। ध्वनिलेखागार

के अध्ययन में अहमियत होती है, जो संगीत साधकों को उनकी निजी शैली को विकसित करने में मदद करता है। इसके अलावा, ध्वनिलेखागार के माध्यम से संगीत साधकों को संगीत सम्बंधित सूचना और परामर्श प्राप्त करने का भी अवसर मिलता है।

तीसरा ध्वनिलेखागार संबंधित सर्वेक्षण की प्रश्नावली जिसके अंतर्गत उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के साधक व विद्यार्थीओं के लिए किया गया है जिसमे संगीत साधकों के संगीतिक अनुभव और ध्वनिलेखागार के संदर्भ में जानकारी, संगीत के शिक्षण और संगीतिक समालोचना में रुचि रखने वाले लोगों के अनुभव, उनके गुरु की भूमिका, संगीत के विभिन्न माध्यमों का उपयोग, ध्वनिलेखागार के महत्व, और संगीत सुनने की विधियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इन प्रश्नों से यह समझा जा सकता है कि ध्वनिलेखागार की सामग्री के उपयोग का तरीका क्या है और संगीत साधनाओं के लिए इसका महत्व क्या है।

सर्वेक्षण की दृष्टि से प्रामाणिकता को सिद्ध करने के लिए इस अध्याय मे तीनों प्रश्नावलीयां यहाँ प्रस्तुत की जा रही है।

**ध्वनिलेखपाल से साक्षात्कार के लिए प्रश्नावली**

1. आपके ध्वनिलेखागार के विषय मे कुछ बताइए, कब शुरू हुआ? किन किन लोगों के प्रयत्नों से ये आज इस स्वरुप में है?
2. आपने किस उदेश्य के साथ ध्वनिलेखागार की संरचना की? आप ध्वनिलेखागार को किस तरह देखते है ?
3. आपके ध्वनिलेखागार मे किस प्रकार के ध्वनिमुद्रण का संग्रह किया है?
4. क्या आपके ध्वनिलेखागार में संगीतकी सभी विधाओं को सम्मिलित किया गया है? उसमे गायन के कितने ध्वनिमुद्रण है?
5. आपके ध्वनिलेखागार में कुल मिलाकर कितने ध्वनिमुद्रण है ?
6. क्या आपके ध्वनिलेखागार में दुर्लभ कृतियाँ भी है? जो आपको लगता है, शायद यह भारत के किसी भारतीय शास्त्रीय गायनके परिप्रेक्ष्य से अन्य ध्वनिलेखागार में उपलब्ध नहीं होंगी?
7. क्या आपके ध्वनिलेखागार में जितने ध्वनिमुद्रण है वह सब Digitized Format में है की, कुछ Analogue Format में है ?
8. आपने अपने ध्वनिलेखागार को समृद्ध करने और योग्य तरीकोसे निर्वाहन करने के लिए क्या पद्धतिया अपनाई है ?

9. योग्य निर्वाहन और संवर्धन हेतु आपक ध्वनिलेखागार में पूर्ण कालीन या अंशकालीन सेवा देनेवाले Experts होते है?
    - अगर नहीं– End the topic
    - अगर हाँ–क्या आपके साथ जुड़े सेवाभावी कर्मचारीको योग्य skills की जो आपके ध्वनिलेखागार को अच्छेसे चला सके उसके लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करते है?
10. क्या आप समय समय पर ध्वनिलेखागार के सभी ध्वनिमुद्रण को Recheck करते है?
11. आप प्रवर्तमान तकनीक (Mordern Technology) का उपयोग करते है ?
12. आपने अपने ध्वनिलेखागार को संगीत रसिको और विद्यार्थियो तक पहुचाने के लिए क्या व्यवस्थाए की है?
13. क्या दूर दराज के लोग उतनी ही आसानी से आपके ध्वनिलेखागार का लाभ ले सकते है?
14. अब तक आपके ध्वनिलेखागार से कितने विद्यार्थी, कलाकारों तथा संगीत रसिको को लाभ मिला होगा?
15. आपके मुताबिक ध्वनिलेखागार के लाभ क्या है? किस प्रकार अलग अलग level पर लाभकारक है?
16. आपके मुताबिक ध्वनिलेखागार में क्या नहीं होना चाहिए? और उसके निवारण हेतु आपने क्या व्यवस्थाए की है?
17. आपकी नज़र में कोई और बंधनकर्ता चीज़े जिससे लोगो तक ध्वनिलेखागार के ध्वनिमुद्रण को पहुचाने में दिक्कत होती हो?
18. क्या आप किसी अन्य ध्वनिलेखागार या सरकारी संस्थाओसे जुड के ध्वनिलेखागार के भविष्यलक्षी योजनाओं पर कार्य करते है?
19. क्या भारत के ध्वनिलेखागार को किसी एक Platform पर आना चाहिए ? और उसके लिए आपने कोई ठोस कदम अपनाए है? अगर आपको ऐसे माध्यमो के विषय में माहिती मिले तो आप सहयोग देंगे?
20. आप ध्वनिलेखागार का क्या भविष्य देखते है?
21. क्या आप ध्वनिलेखागार से जुड़े और आपकी ही तरह निष्ठा से कार्यरत महानुभावो के बारे में माहितगार कर सकते है ? जिससे मेरे इस विषय को योग्य दिशा मिले?
22. इस विषय से जुड़े साहित्य और Internet Souces के विषय में जानते है?

**23.** आपके ध्वनिलेखागार के विषय में या मेरे इस विषय के अंतर्गत कोई अन्य Suggestion ?

## ध्वनिलेखागार के संदर्भ में कलाकारो के लिए प्रश्नावली

1. आप Archives को कैसे देखते है ?
2. क्या आप मानते है की संगीत साधक या श्रोता सही मायने में सुनने की विधा जानते है?
3. आप कैसे और किसको सुनते है?
4. आपके साधना के अलग अलग स्तर पर Archives कैसे अपनी भूमिका अदा करता है?
5. क्या आप किसी एक ही धारा या परम्परा को सुनते है या सभी परम्परा को सुनकर अपने गायन में समाहित करते है?
6. क्या आप मानते है की विविध गुरु परम्परा को सुनने के बाद आप अपनी नीजी शैली को जल्दी जान पाते है और उसको निखार सकते है?
7. क्या आपको लगता है की Archives में कैसे, कब और किस प्रकार सुनना चाहिए इस विषय पर सतत मार्गदर्शन मिलना चाहिए?
8. आप Archives के अध्ययन को किस प्रकार महत्व देते है?
9. क्या आप रियाज़ के भागरूप Archives को संमिलित करना उचित समझते है?
10. क्या आप एसा मानते है की Archives के अध्ययन से साधक के Aesthetics (सौन्दर्यात्मकता) पर भारी प्रभाव पड़ता है?
11. क्या आप अपना निजी Archives रखते है? उसमे किन किन कलाकारों को आप सुनते है?
12. आप अपने विद्यार्थीओ और संगीत रसिको को Archives संबंधित सूचन या परामर्श देना चाहेंगे ?

## ध्वनिलेखागार संबंधित सर्वेक्षण हेतु प्रश्नावली (उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के साधकों-विद्यार्थीओं के लिए)

1. साधक-विद्यार्थी का नाम / Name :
2. आयु / Age
3. आप हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन का अभ्यास किस पद्धति से करते हैं? /
   By which system do you learn North Indian Classical Vocal?
   - गुरु - शिष्य परंपरा / Guru-Shishya Parampara

- प्रवर्तमान शैक्षणिक पद्धति (यूनिवर्सिटी या संस्थागत कोर्स)/ Academic Education System (Courses run by Universities or Academies)
- दोनों / Both

**4.** यूनिवर्सिटी या संस्था का नाम / Name of University or Institute

**5.** आपके गुरु(ओं) का नाम / Name of Guru(Mentor) :

**6.** आपके गुरु आपको शैक्षणिक प्रक्रिया के भागरूप उच्चकोटी के कलाकारो का गायन सूनने के लिए प्रेरित करते हैं?

Does your teacher encourage you to listen to top class artists as a part of the educational purpose?

- हाँ / Yes
- ना / No

**7.** आप उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के किन-किन कलाकारो को ज़्यादातर सुनते हैं?

To whom do you listen the most among North Indian Classical Vocalists?

**8.** आप किस इलेक्ट्रोनिक माध्यम से विद्वान कलाकारों का गायन सुनते है?

By which electronic medium you listen artists?

यु-ट्यूब या अन्य इंटरनेट के माध्यम / YouTube or Any Other Internet Medium

सांगीतिक ग्रंथालय या ध्वनिलेखागार / Music Library or Music Archives

नीजी संग्रह / Own Collection

उपर्युक्त सभी माध्यम / By all medium as above

**9.** आपने कभी ध्वनिलेखागार (Music Archives) की मुलाक़ात ली है?

Have you ever visited Music Archives?

- हाँ / Yes
- ना / No

**10.** कृपया आपके द्वारा मुलाक़ात लिए हुए ध्वनिलेखागार (Music Archives) का नाम दीजिये। (अगर आपके ऊपर के प्रश्न का उत्तर 'हाँ' हैं तो) /

Please give the name of Music Archives you visited. (if your above answer is 'Yes')

**11.** आपने कभी ध्वनिलेखीय श्रवण सत्र (Music Archival Listening Session) सुने हैं ?

Have you ever attended Music Archival Listening Session?

- हाँ / Yes
- ना / No

**12.** आपने निम्नलिखित किस किस माध्यम से प्रत्यक्ष रूप में संगीत सुना हैं?

By which mentioned medium below you have practically heard music?

- 78 आर.पी.एम. एल.पी. / 78 rpm LP
- स्पूल / Spool
- द्रश्य-श्राव्य कैसेट / Audio-Video Cassettes
- सी.डी.-डी.वी.डी. / CD–DVD
- डिजिटल रेकोर्डिंग/ Digital Recording

**13.** आपके मत से सांगीतिक ग्रंथालय और ध्वनिलेखागार एक ही हैं कि भिन्न? इस विषय पर आपके विचार व्यक्त करे।

Do you think Music Library and Music Archives are same? Describe your thoughts about it.

**14.** आप कभी रूबरू ध्वनिलेखपाल (Music Archivist) से मिले हैं? यदि हाँ, तो उनके बारे में तथा उनके कार्य के बारे में कृपया बताइए।

Have you ever met Music Archivist? if yes, please describe about him/her and contribution.

**15.** क्या आप मानते हैं कि विद्वान गायक कलाकारों को सुनने से आपके खुद के गायन में या समग्र संगीत शिक्षण में लाभ होता हैं? कैसे? कृपया आपके विचार व्यक्त करे।

Do you believe that listening to the maestros will benefit your own vocal training or performance? How? Please describe.

**16.** क्या आप मानते हैं कि "किस गायक में क्या खूबी है?" "क्या सुनना चाहिए?" "कैसे सुनना चाहिए?" यह बाबत पर सतत मार्गदर्शन जरूरी है?

Is it necessary to have a constant guidance for questions like "How to listen?" "What should be focus of listening? etc.

- हाँ / Yes
- ना / No

**17.** भारत के ध्वनिलेखागारों में उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के अनेक दूर्लभ ध्वनिमुद्रण संरक्षित हैं। क्या आपको लगता हैं कि किस ध्वनिलेखागार के पास क्या क्या ध्वनिमुद्रण हैं? वह सूची ध्वनिलेखागार द्वारा प्रसिद्ध होनी चाहिए। जिससे जिज्ञासु साधक वह ध्वनिलेखागार का संपर्क करके उनसे लाभान्वित हो सके! इस विषय पर अपना विचार वर्णन करे।/

Many rare recordings of North Indian Classical Vocal are preserved in the Music Archives of India. Do you think that catalogue with full details should be released by Music Archives for the betterment of students and music practitioner? Describe your thoughts on this topic.

**18.** क्या आपको लगता हैं कि ध्वनिलेखागार के ध्वनिमुद्रण नियत भुगतान करके या निःशूल्क इन्टरनेट के माध्यम से उपलब्ध होने चाहिए?

Do you think that rare recordings of Music Archives can be available through subscription (either paid or free) on internet?

- हाँ / Yes
- ना / No

## 6:2 निष्कर्ष-

संगीत साधक के लिए पुरालेख का महत्व अत्यंत उच्च है। यह संगीतीय पुस्तकालय साधक को न केवल प्राचीन गायकों के अद्वितीय गायन को सुनने का अवसर प्रदान करता है, बल्कि उसे अपनी संगीत यात्रा को और भी समृद्ध करने में मदद करता है। ध्यान देने योग्य गायकों के रिकॉर्डिंग सुनकर, साधक नए राग, ताल, संगत, और रियाज की प्रारंभिक ध्वनिमुद्रित को समझता है। यह उसे अपने गायन में सौंदर्यता और उच्चता लाने में सहायक होता है। इसके अलावा, पुरालेख के अध्ययन से साधक का ध्यान बढ़ता है, जिससे वह संगीत की और समझाने में और भी गहराई तक जा सकता है। यहाँ तक कि विविधता के माध्यम से, संगीत साधक अपनी निजी शैली को समृद्ध करता है और साधना में उत्कृष्टता प्राप्त करता है। इसलिए पुरालेख का अध्ययन संगीत साधक के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है, जो उसकी संगीतिक यात्रा को सार्थकता और उत्कृष्टता में मार्गदर्शन करता है।

कुछ प्रश्ननों का कोई जवाब नहीं प्राप्त हुआ, तो यह एक सामान्य और सामाजिक प्रक्रिया है। समय-समय पर, प्रश्न पूछने वाले या उत्तर देने वाले दोनों ही व्यक्ति के लिए कई कारण हो सकते हैं जिनके कारण उत्तर नहीं मिलता है। कई बार विचारशीलता की स्तर में समझाने वाले प्रश्न भी होते हैं, जिनके उत्तर देने के लिए अधिक समय और सोच की आवश्यकता होती है। ऐसे समय में, उत्तर देने के लिए प्रतीक्षा करने का सब्र और समझदारी की जरूरत होती है। इस प्रकार के प्रतिसाद की समीक्षा करके, हम आगे की कार्रवाई के लिए सही दिशा में बढ़ सकते हैं। यहाँ तीन प्रश्नावलियों मे से तीसरी प्रश्नावली (ध्वनिलेखागार संबंधित सर्वेक्षण हेतु प्रश्नावली (उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के साधकों-विद्यार्थीओं के लिए) के निष्कर्ष को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। जिसमे कुल 84 प्रतिक्रिया प्राप्त हुयी है, इन्ही प्रतिक्रिया के आधार पर इसका विश्लेषण किया गया है। प्रश्नों की प्रतिक्रिया से यह स्पष्ट होता है की संगीत साधक व विद्यार्थियों का रुझान व उत्साह संगीत के प्रति है। वर्तमान मे सोशीयल मीडिया के सापेक्ष ध्वनिलेखागार गुणवत्ता और विश्वसनीयता के रूप में ज्यादा कारगर साबित होता दिखाई देता हैं। जबकि सरलतम कार्यप्रणाली, लोकभोग्यता और व्यापकता को ध्यान में रखने पर यू-ट्यूब सामान्य जनता तक संस्कृति का प्रचार-प्रसार करने में ज्यादा कारगत साबित होता हैं।

**प्रश्न-3** आप हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन का अभ्यास किस पद्धति से करते हैं?

By which system do you learn North Indian Classical Vocal?

- गुरु - शिष्य परंपरा / Guru-Shishya Parampara
- प्रवर्तमान शैक्षणिक पद्धति (यूनिवर्सिटी या संस्थागत कोर्ष)/ Academic Education System (Courses run by Universities or Academies)
- दोनों/ both

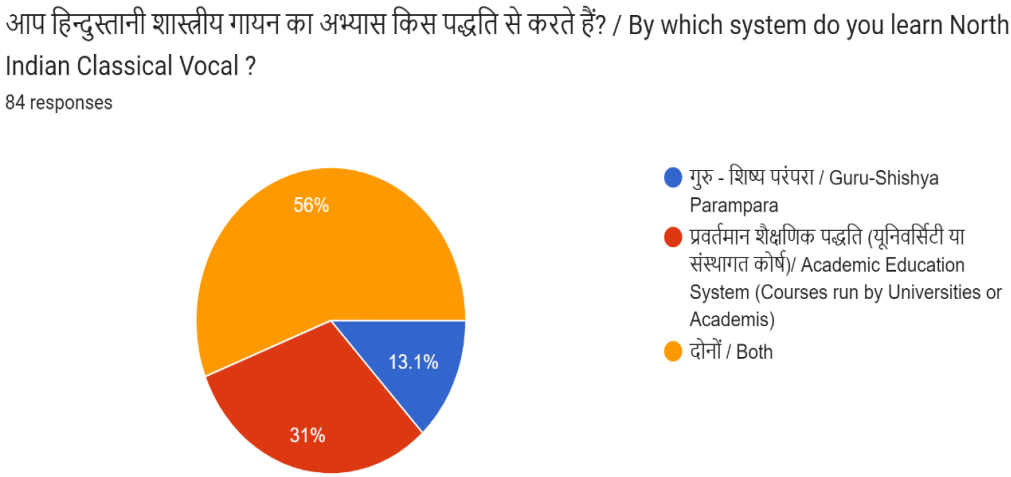

इस प्रश्न के निष्कर्ष के आधार पर, मिले 84 प्रतिक्रियाओं के अनुसार, हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन के अभ्यास कर रहे संगीत साधकों और विद्यार्थियों में विभिन्न अभ्यास पद्धतियाँ पाई जा रही हैं। इस अध्ययन के अनुसार, 13.1% लोग गुरु-शिष्य परंपरा के अनुसार हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का अभ्यास कर रहे हैं। 31% लोग वर्तमान शैक्षणिक पद्धति के तहत (जैसे कि यूनिवर्सिटी या संस्थागत कोर्स) इस क्षेत्र में अध्ययन कर रहे हैं। और आखिरकार, 56% लोग गुरु-शिष्य परंपरा के साथ-साथ वर्तमान शैक्षणिक पद्धति का भी लाभ उठा रहे हैं। यह अंक उनके लिए एक मार्गदर्शन साबित हो सकते हैं कि किस तरह का अध्ययन उन्हें अधिक लाभकारी हो सकता है।

**प्रश्न-6** आप किस इलेक्ट्रोनिक माध्यम से विद्वान कलाकारों का गायन सुनते है?

By which electronic medium you listen artists?

- यु-ट्यूब या अन्य इंटरनेट के माध्यम / YouTube or Any Other Internet Medium
- सांगीतिक ग्रंथालय या ध्वनिलेखागार / Music Library or Music Archives
- नीजी संग्रह / Own Collection
- उपर्युक्त सभी माध्यम / By all medium as above

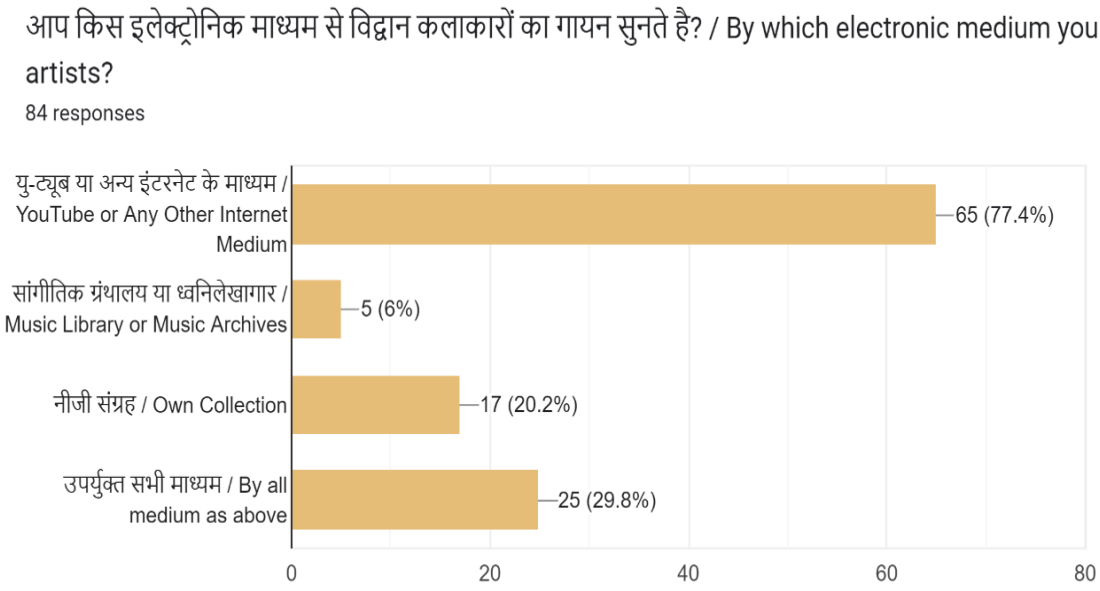

इस प्रश्न के आंकड़ों के अनुसार, 84 प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं, जिनमें से 77.4% साधकों और विद्यार्थियों यू-ट्यूब या अन्य इंटरनेट प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से विद्वान कलाकारों का गायन सुनते हैं। 6% उन्हें संगीतिक ग्रंथालय या ध्वनिलेखागार के माध्यम से संगीत का आनंद लेने का शौक है। 20.2% निजी संग्रहों के माध्यम से अपने पसंदीदा कलाकारों की ध्वनि सुनते हैं। 29.8% उपरोक्त सभी माध्यमों का संयोजन करके संगीत का आनंद लेते हैं।

भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में संगीत के प्रेमी साधकों के बीच किये गए एक सर्वेक्षण ने दिखाया है कि उनमें से 80 कला साधकों का ज्यादातर संगीत सुनने का प्रमुख माध्यम यू-ट्यूब या अन्य इंटरनेट प्लेटफ़ॉर्म है। इससे स्पष्ट होता है कि यू-ट्यूब की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है और लोग इसे संगीत सुनने का प्रमुख साधन मान रहे हैं।

विश्वभर में भारतीय शास्त्रीय संगीत के जितने भी चाहक हैं, उन्होने भारतीय शास्त्रीय संगीत के अनेक प्रसिद्ध और दूर्लभ द्रश्य-श्राव्य ध्वनिमुद्रणको YouTube पर अपलोड करके जैसे एक सांगीतिक ग्रंथालय और ध्वनिलेखागार का एक मिला-जुला रूप सामान्य जनता के लिए उपलब्ध करा दिया हैं। विद्यार्थियों, गुरुओं, कलाकारो और रसिको द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत के अध्ययन-अध्यापन विषयक, कला प्रस्तुति और दुर्लभ दृश्य-श्राव्य ध्वनिमुद्रण खुले मंच से सांझा किए गए हैं कि जिससे संगीत क्षेत्र से जुड़े सभी लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

ध्वनिलेखागार के ध्वनिमुद्रणों को सुनने के लिए निश्चित स्थान पर जाना पड़ता हैं। (हालाँकि कुछ ध्वनिलेखागार इन्टरनेट के माध्यम से अपनी कलाकृति सामान्य जनता से सांझा करते हैं।) ध्वनिमुद्रणों की संख्या कम होती हैं। ध्वनिलेखागार में ध्वनिमुद्रणों के दाता सीमित होते हैं। सभी दाताओ के ध्वनिमुद्रणों को सरलता से यह मंच और स्थान नहीं मिलता। ध्वनिलेखागार में नियत प्रवेश प्रक्रिया पूर्ण किए बिना कोई भी ध्वनिमुद्रण तक सामान्य व्यक्ति पहुँच नहीं सकता। ध्वनिमुद्रणों के संदर्भ में श्रोताओं के अभिप्राय कम मिलते हैं। सामान्य जनता में ध्वनिलेखागार के प्रति जागरूकता बहुत कम दिखाई पड़ती हैं।

**प्रश्न-9** आपने कभी ध्वनिलेखागार (Music Archives)की मुलाक़ात ली है?

Have you ever visited Music Archives?

- हाँ / Yes
- ना / No

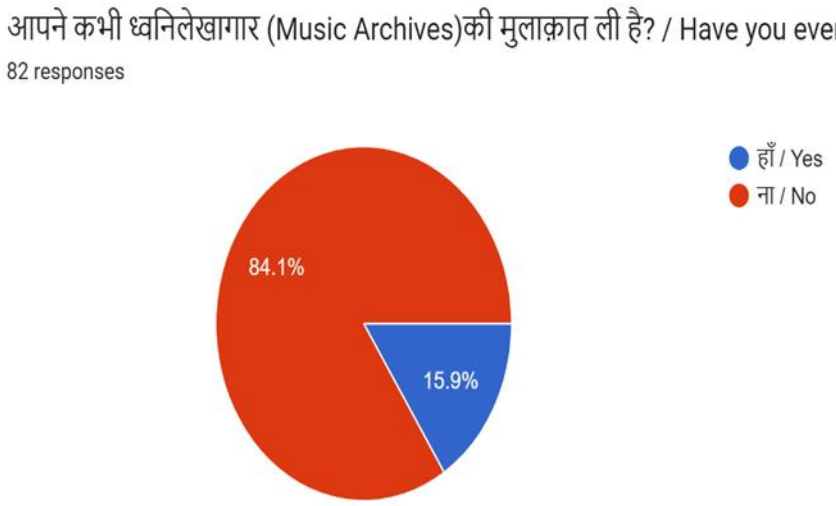

आपने कभी ध्वनिलेखागार (Music Archives)की मुलाक़ात ली है? / Have you ever visited Music Archives?
82 responses




इस प्रश्न के निष्कर्ष के लिए 82 प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है, जिनमें से 84% संगीत साधकों और विद्यार्थियों ने कभी भी ध्वनिलेखागार की मुलाकात नहीं की है। केवल 15.9% संगीत साधकों और विद्यार्थियों ने ध्वनिलेखागार की मुलाकात की है। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि ध्वनिलेखागारों का इस समुदाय के बीच कितना कम उपयोग किया जाता है, जो इसके प्रति उनकी रुचि की कमी को दर्शाता है। भारत के विविध भौगोलिक क्षेत्र में गुरु-शिष्य परंपरा या यूनिवर्सिटी में संगीत का अभ्यास करते कला साधको पर किया गया सर्वेक्षण यह दर्शाता हैं, कि ध्वनिलेखागार की मुलाक़ात लेनेवाले संगीत साधको की संख्या ध्वनिलेखागार के प्रति बहुत कम जागरूकता को दर्शाता हैं। ध्वनिलेखागार सीमित क्षेत्र के लोगों से संबन्धित होने के कारण दुर्लभ ध्वनिमुद्रणों के विषय में अत्यंत प्राचीन कलाकृतियों के मिलने की संभावना अत्यंत कम होती हैं।

यू-ट्यूब के माध्यम में पूरे विश्व से जुड़ाव होने के कारण कोई ऐसी दुर्लभ कलाकृति मिलते रहने की संभावना अधिकतम होती हैं, जो प्राचीनतम हो भारतीय संगीत भारत की सांस्कृतिक विरासत हैं, जिनके योग्य संरक्षण और संवर्धन में भारत का सांस्कृतिक हित छिपा हैं। भारत जितना अपने देश की विरासत को लेकर संवेदनशील हैं, उतना कोई अन्य देश संवेदनशील हो वह जरूरी नहीं। यू-ट्यूब अन्य देश से संचालित होता हो और अपलोड किए गए दृश्य-श्राव्य ध्वनिमुद्रण का योग्य संरक्षण हो वह सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। अन्य देशो में लगे प्रतिबंध यह बात प्रस्तुत करती हैं कि भारतीय परंपरा के संरक्षण के लिए यू-ट्यूब संपूर्णतः योग्य माध्यम नहीं माना जा सकता। जबकि भारत के ध्वनिलेखागारभारतीय परम्परा के संरक्षण के लिए विश्वास पात्र माध्यम है।

**प्रश्न-10** आपने कभी ध्वनिलेखीय श्रवण सत्र (Music Archival Listening Session) सुने हैं?

Have you ever attended Music Archival Listening Session?

- हाँ / Yes
- ना / No

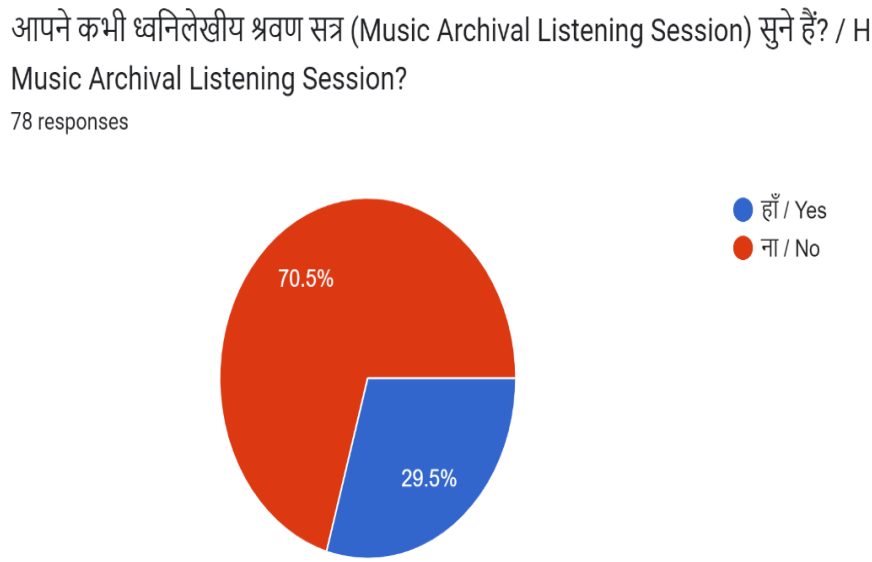


इस प्रश्न के निष्कर्ष के लिए 78 प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है, जिनमें से 70.5% संगीत साधकों और विद्यार्थियों ने कभी भी ध्वनिलेखीय श्रवण सत्र का अनुभव नहीं किया है। इसका मतलब है कि बहुत से लोग संगीत के ध्वनिलेखीय रूप को समझने और सुनने की प्रक्रिया में पूरी तरह से नवीनतम नहीं हैं। केवल 29.5% लोगों ने ध्वनिलेखीय श्रवण सत्र को सुना है। ध्वनिलेखीय श्रवण सत्र का अभ्यास संगीत सिद्धांतों, रागों और तालों की समझ को गहराता है, जिससे संगीत साधक और विद्यार्थी संगीत को एक नए स्तर पर समझ सकते हैं। यह आंकड़े उजागर करते हैं कि ध्वनिलेखीय श्रवण सत्र की प्रस्तुति कितनी कम है और इसे संगीत साधकों और विद्यार्थियों ने कितना कम अनुभव किया है। इस विषय पर जोड़ते हुए, इस संदर्भ में उन्हें ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि ध्वनिलेखीय श्रवण के महत्व को समझा जा सके और संगीत की गहराई में विस्तार किया जा सके। इससे संगीतीय साधना में उन्हें नई दिशा मिल सकती है और वे संगीत को अधिक समझ सकते हैं।

**प्रश्न-11** कृपया आपके द्वारा मुलाक़ात लिए हुए ध्वनिलेखागार (Music Archives) का नाम दीजिये। (अगर आपके ऊपर के प्रश्न का उत्तर 'हाँ' हैं तो) Please give the name of Music Archives you visited. (If your above answer is 'Yes'

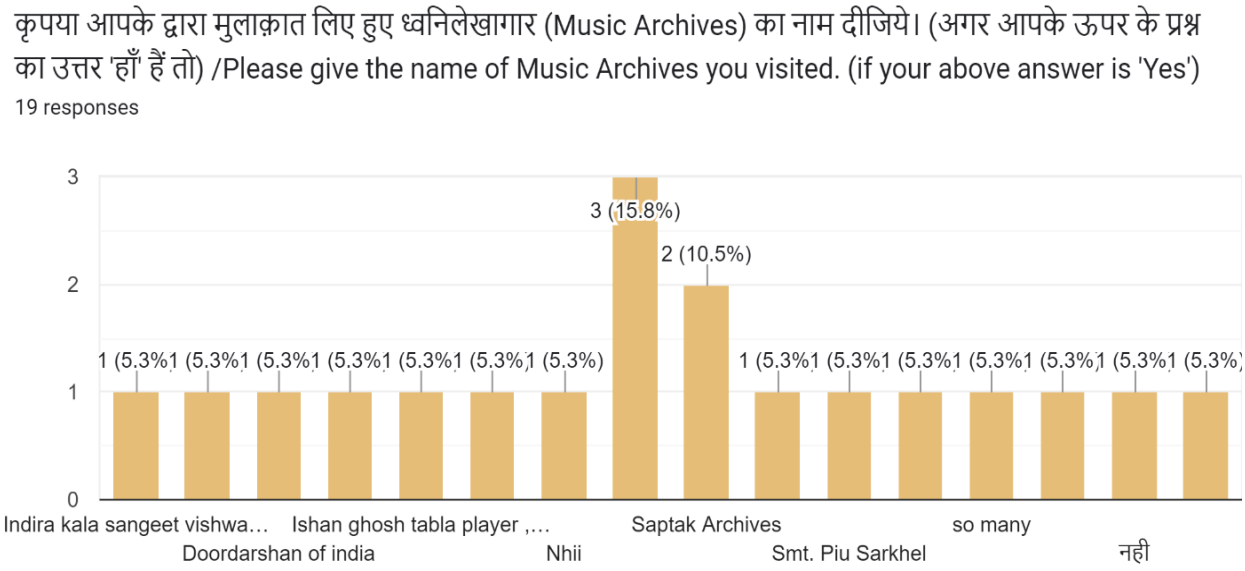


इस प्रश्न के निष्कर्ष के लिए 19 प्रतिक्रिया प्राप्त हुयी है, इन प्रतिक्रियाओं के अनुसार 5.3 % संगीत साधकों व विद्यार्थीयों द्वारा मुलाक़ात लिए हुए ध्वनिलेखागार (Music Archives) का नाम इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, 5.3 % संगीत साधकों व विद्यार्थीयों द्वारा मुलाक़ात लिए हुए ध्वनिलेखागार (Music Archives) का नाम दूरदर्शन, 5.3 % संगीत साधकों व विद्यार्थीयों द्वारा मुलाक़ात लिए हुए ध्वनिलेखागार (Music Archives) का नाम ऑल इंडिया रेडियो भोपाल, 5.3 % संगीत साधकों व विद्यार्थीयों द्वारा मुलाक़ात लिए हुए ध्वनिलेखागार (Music Archives) का नाम फ़ैकल्टी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स, 5.3 % संगीत साधकों व विद्यार्थीयों द्वारा मुलाक़ात लिए हुए ध्वनिलेखागार (Music Archives) का नाम नेशनल सेंटर फॉर द परफॉर्मिंग आर्ट्स (एनसीपीए), मुंबई, 15.8 % संगीत साधकों व विद्यार्थीयों द्वारा मुलाक़ात लिए हुए ध्वनिलेखागार (Music Archives) का नाम सप्तक ध्वनिलेखागार इस निष्कर्ष के प्रतिक्रिया पूर्ण नहीं है इसलिए प्राप्त प्रतिक्रिया के अनुसारयाह कहा जा सकता है की वर्तमान मे संगीत साधकों व विद्यार्थीयों द्वारा मुलाक़ात लिए हुए ध्वनिलेखागार (Music Archives) की सूची मे बहुत से नाम है जो यह दर्शाता है की आज भी ध्वनि लेखागार से संगीत के साधक व विद्यार्थी जुड़े हुए है।

**प्रश्न-12** आपने निम्नलिखित किस किस माध्यम से प्रत्यक्ष रूप में संगीत सुना हैं?

By which mentioned medium below you have practically heard music?

- 78 आर.पी.एम. एल.पी. / 78 rpm LP
- स्पूल / Spool
- द्रश्य-श्राव्य कैसेट/ Audio-Video Cassettes
- सी.डी. - डी.वी.डी./ CD – DVD
- डिजिटल रेकोर्डिंग /Digital Recording

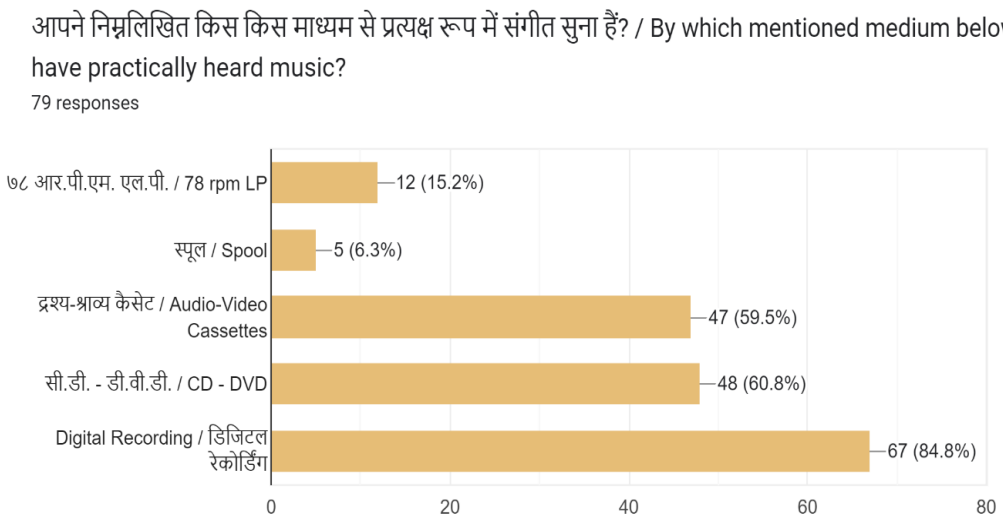


इस प्रश्न के निष्कर्ष के लिए 79 प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है, जिनमें से 15.2% संगीत साधकों और विद्यार्थियों ने 78 आर.पी.एम. एल.पी. के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप में संगीत सुना है। केवल 6.3% लोगों ने स्पूल के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप में संगीत का आनंद लिया है। द्रश्य-श्राव्य कैसेट के माध्यम से संगीत सुनने वालों की संख्या 59.5% है। सी.डी.-डी.वी.डी. के माध्यम से संगीत सुनने वालों की संख्या 60.8% है। अधिकांश लोग, यानी 84.8%, ने डिजिटल रेकॉर्डिंग्स के माध्यम से संगीत का आनंद लिया है।

यह आंकड़े साहित्यिक और आवाज के प्रसारण माध्यमों के उपयोग की प्राधान्य को दर्शाते हैं। इसका मतलब है कि डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रयोग संगीत की प्राप्ति में बढ़ता हुआ है, जो संगीत के प्रसारण और पहुंच को बढ़ावा देता है। इस विवेचन से पता चलता है कि आधुनिक संगीत

साधक और विद्यार्थी अब इन तकनीकी उपकरणों का उपयोग करते हैं जो उन्हें संगीत को सुनने में अधिक सहज और उपयोगी बनाते हैं।

**प्रश्न-16** क्या आप मानते हैं कि "किस गायक में क्या खूबी है?" "क्या सुनना चाहिए?" "कैसे सुनना चाहिए?" यह बाबत पर सतत मार्गदर्शन जरूरी है?

Is it necessary to have a constant guidance for questions like "How to listen?" "What should be focus of listening? etc.

- हाँ / Yes
- ना / No

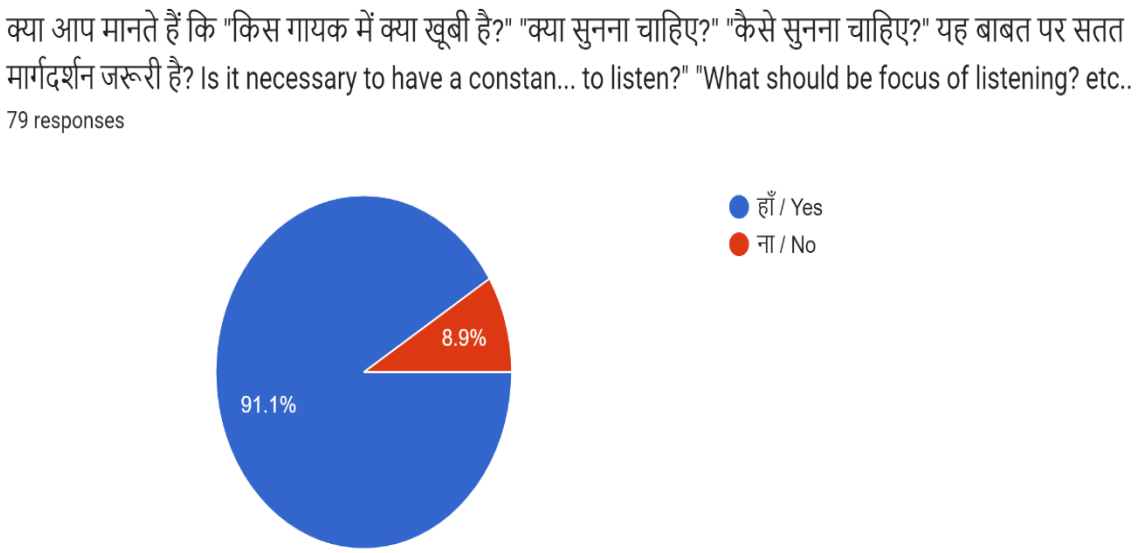


संगीत साधकों और विद्यार्थियों के सम्मुख एक महत्वपूर्ण सवाल है: "किस गायक में क्या खूबी है?" "क्या सुनना चाहिए?" "कैसे सुनना चाहिए?" इस विषय पर प्राप्त 79 प्रतिक्रियाओं के अनुसार, 91.1% लोग इस मानते हैं कि इस पर सतत मार्गदर्शन जरूरी है। वे मानते हैं कि एक गायक में उनकी खूबियों को पहचानना, उनके संगीत को समझना और उसका आनंद लेना महत्वपूर्ण है। हालांकि, 8.9% लोग इस विचार को अन्यथा मानते हैं। उन्हें लगता है कि इस प्रकार के मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं है। वे यह मानते हैं कि संगीत का आनंद लेना व्यक्तिगत अनुभव है और हर व्यक्ति को अपनी पसंद के अनुसार संगीत का आनंद लेना चाहिए। संगीत साधकों और विद्यार्थियों के लिए इस मुद्दे पर विवेचन और विचार करना महत्वपूर्ण है, ताकि उन्हें उचित मार्गदर्शन और सही दिशा मिल सके।

**प्रश्न-18** क्या आपको लगता हैं कि ध्वनिलेखागार के ध्वनिमुद्रण नियत भुगतान करके या निःशूल्क इन्टरनेट के माध्यम से उपलब्ध होने चाहिए?

Do you think that rare recordings of Music Archives can be available through subscription (either paid or free) on internet?

- हाँ / Yes
- ना / No

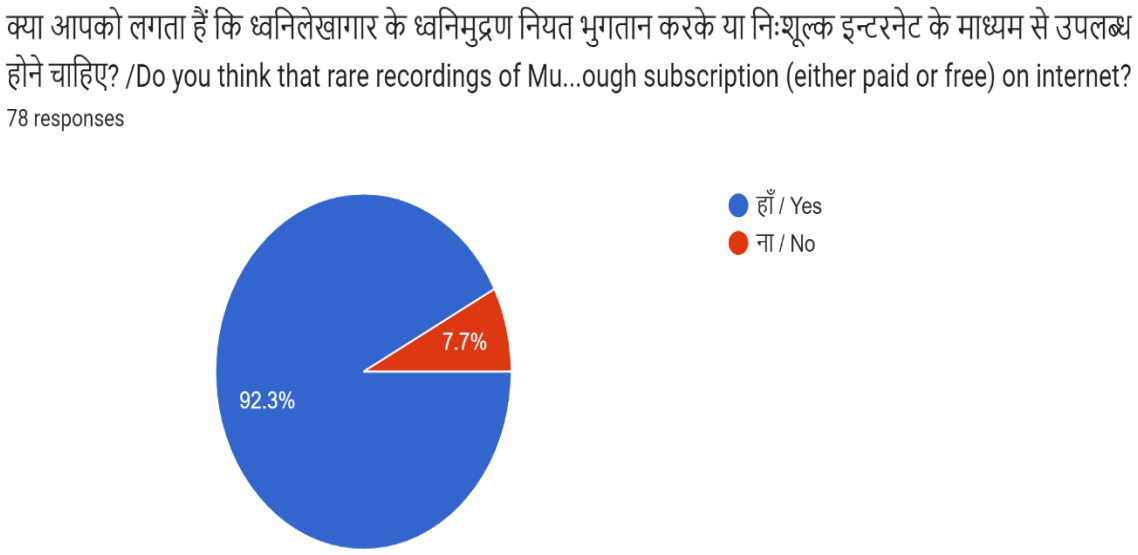


इस प्रश्न के निष्कर्ष के लिए 78 प्रतिक्रिया प्राप्त हुयी है, इन प्रतिक्रियाओं के अनुसार 92.3 % संगीत साधक व विद्यार्थी यह लगता हैं कि ध्वनिलेखागार के ध्वनिमुद्रण नियत भुगतान करके या निःशुल्क इन्टरनेट के माध्यम से उपलब्ध होने चाहिए। 7.7 % संगीत साधक व विद्यार्थी यह लगता हैं कि ध्वनिलेखागार के ध्वनिमुद्रण नियत भुगतान करके या निःशूल्क इन्टरनेट के माध्यम से उपलब्ध नहीं होने चाहिए। अनेक मुद्दो पर यू-ट्यूब योग्य और सरल होने के बावजूद संस्कृति के जतन, संरक्षण, संवर्धन एवं विद्यार्थी, गुरु और कलाकारो के संबंध में ध्वनिलेखागार की तरह विश्वसनीयता में खरा नहीं उतर सकता। ध्वनिलेखागार को सामान्य जनता में लोकभोग्य एवं उपयुक्त करने के लिए प्रचार-प्रसार की और यू-ट्यूब की तरह सरल कार्यप्रणाली पर अमल करने की आवश्यकता हैं।

*****